प्रसाद की सौन्दर्य–चेतना

गीता यादव

हिन्दी साहित्य को आलोकित करने वाले बहुमुखी प्रतिभा के धनी जयशंकर प्रसाद एक सजग कवि, नाटककार, कहानीकार उपन्यासकार, निबन्ध–लेखक तथा समीक्षक सभी रूपों में जाने जाते है। अपनी रचनाओं में प्रसाद जी ने अपने युग की सांस्कृतिक चेतना का रसात्मक संस्करण प्रस्तुत किया है।आधुनिक हिन्दी काव्यधारा में स्वच्छन्द चेतना का प्रवर्तन, अन्तर्मुखी अनुभूतिमयी भावधारा का मोह इसी प्रतिभा सम्पन्न कवि के द्वारा सम्भव हो सका। इस सन्दर्भ में डॉ. विजयेन्द्र स्नातक का कहना है–''निश्चय ही प्रसाद साहित्य संस्कृति एवं तत्व चिंता के क्षेत्र में एक मेधावी मनीषी, आलोचना के क्षेत्र में एक आलोकवाही साहित्य चिंतक और सर्जन के क्षेत्र में एक क्रान्तिकारी प्रबुद्ध और रस वेत्ता–सृष्टा तथा विविध साहित्य शैलियों के आविष्कर्ता है।''

जयशंकर प्रसाद की काव्य–चेतना निरन्तर उर्ध्वगामिनी रही है। वह तो सतत् स्वच्छन्द मार्ग पर प्रवाहित होती रही। उसमें इनके मानसिक विकास क्रम का प्रतिबिम्ब झलकता है। प्रारम्भ से ही प्रसाद ने किसी भी प्रकार की साहित्यिक सीमा के भीतर बद्ध होना उचित नहीं समझा। इन्होंने सर्वप्रथम द्विवेदी युगीन अनैसर्गिक काव्य व्यापार के विरुद्ध विद्रोह का स्वर उठाया काव्य को नियमों के जटिल बन्धनों से मुक्त कर, मानव जीवन के मार्मिक प्रसंगों को स्पर्श करने योग्य बनाया। इन्होंने कविता की रूद्ध गति को पूर्णतः उन्मुक्त करने का प्रयास अपनी प्रारम्भिक कृतियों में किया।